श्री जी साहिब जी खुस्की चले, रण आन उतरे ।
चीरक भेष करके, धोरा जी मारग पन्थ चढ़े ॥१॥

नाव चलने के पश्चात् आप श्री जी मंडई से पैदल चलकर एक जंगल में आ गए और वहां से फकीरी वेश धारण कर धोराजी पहुंचे ।

ए जो साथ सूरत का, खंभालिया से चले ।
धोरा जी में उतरे, श्री जी साहिब सों आये मिले ॥२॥

उधर सूरत के सुन्दरसाथ सबको लेकर खंभालिये से नाव में चलकर धोराजी आए और श्री जी से मिलाप किया ।

प्रेम जी थावर सुनी, गाड़ी ले दौड़े ये ।
आये मिले मारग में, साथ को चढ़ाय लिये जे ॥३॥

प्रेम जी और थावर भाई खेती करने वाले दो सुन्दरसाथ थे । जब उनको पता चला कि श्री जी यहां आए हैं तो अपनी-अपनी बैलगाड़ी लेकर आए और सब सुन्दरसाथ को उस पर बैठा लिया । जब धोराजी से श्री जी बैलगाड़ी में सवार होकर चल रहे थे तब एक तो अधिक सुन्दरसाथ होने के कारण बोझ अधिक था, दूसरे दरिया का किनारा होने के कारण मार्ग रेतीला था । बैल पूरे जोर से चल तो रहे थे लेकिन कहीं न कहीं बालू या कीचड़ होने के कारण से गाड़ी धंस जाती थी तो चलाने वाला बैलों को लोहे के सुए से मारता था । फिर भी बैल अपने जुए को छोड़ता नही था । तब श्री जी अन्दर ही अन्दर अपने मन को इस दृश्य से समझाते हैं कि यदि यह अबूझ बैल बिना किसी गुनाह के और पूरा कार्य करते हुए पूरा बोझ ढोते रहने पर भी गाड़ीवान की मार खा रहा है तो तेरी गर्दन पर श्री राज जी महाराज ने सुन्दरसाथ की जागनी वाली बोझ की गाड़ी का जुआ रखा है । भले तुम घर-बार त्याग कर तथा माया को छोड़कर उस कार्य के लिये समर्पित हो गये हो, परन्तु धर्म की गाड़ी को हांकने वाले निर्दयी बिहारी जी तुम्हें सुये अवश्य मारेंगे, पर इस बैलगाड़ी का जो जुआ श्री राज जी ने तुम्हारी गर्दन पर रखा है उसे तुम्हें तो इसे मूल मिलावे तक लेकर चलना हैं ।

पदमसी सेवा मिने, रह्या हता दस दिन ।
तहां से आये घोघे मिने, तीन दिन रहे सैयन ॥४॥

पदमसी भाई भी सेवा में शामिल था । धोराजी से दस दिन की यात्रा करके श्री जी घोघा पहुंचे और तीन दिन वहां विश्राम किया ।

तहाँ से सुहाली उतरे, फेर आये सूरत ।
गये सैयद पुर भगवान के, मोहनदास के रहे तित ॥५॥

घोघा से उतर कर सुहाली होते हुए श्री जी सूरत पंहुचे । सैयदपुर मोहल्ले में भगवान भाई और मोहनदास का घर था । वहां जाकर वे उतरे ।

Nijanand App

तहां से सिवजी के, था घर के जोड़े घर ।
उतारे तिन मिने, हुआ सेवा में ततपर ॥६॥

वहां पर ही शिवजी भाई का घर भी साथ ही था । वहां पर अच्छी व्यवस्था होने के कारण शिवजी भाई के घर उतारा किया और शिवजी भाई उनकी सेवा करने लगे ।

सत्रह महीनें तहाँ रहे, कहों ताकी बीतक ।
जिन भाँत लीला करी, सो याद करो बुजरक ॥७॥

सूरत में आप श्री जी १७ महीने रहे । जिस तरह से वहां लीला हुई वह बहुत ही महत्वपूर्ण बीतक है । हे सुन्दर साथ जी ! उसे सदा ही याद रखिये ।

मोहन दास अमीन के, तित चरचा हुई जोर ।
तहाँ दज्जालें देख के, करने लगा सोर ॥८॥

श्री जी एक दिन मोहन दास अमीन के घर चर्चा के लिये गये । तब श्री जी ने पूर्ण आवेश के साथ वृज, रास एवं परमधाम का वर्णन किया तथा बताया कि यहां के बृज-मथुरा महाप्रलय में लय हो जायेंगे जिससे ग्रन्थों के कथावाचकों को बहुत बुरा लगा और वे निन्दा करने लगे ।

तब वहाँ से उठ के, आये सैयद पुर में ।
तहां सिवजी भाई हते, सेवा भली हुई इन सें ॥९॥

तब श्री जी जहां रह रहे थे, वहां सैयदपुर में शिवजी के घर ही आ गये । तब शिवजी ने भली-भांति से सेवा की ।

पहिले ए जो साथ था, सिवजी राम जी नाम ।
तिनको समझाय के, भेजे बिहारी जी के ठाम ॥१०॥

शिवजी भाई और रामजी भाई ने चर्चा सुनी । शिवजी भाई पहले के साथी थे । उन्हें समझाकर बिहारी जी का दर्शन करने के लिये नवतनपुरी भेजा ।

तुम जाय दीदार उत करो, जोलों उत ना लगों कदम ।
तोलों तुम्हारी अलौकिक, सुध न होय आतम ॥११॥

जब तक आप धाम के धनी बिहारी जी के दर्शन नही करोगे तब तक तुम्हारी आतम निर्मल नही होगी।

Nijanand App

इन भांत समझाय के, भेजे भाई सिवजी को ।
फेर पाती लिख दई रामजी को, सो भी चले इन काम मों ॥१२॥

पहले शिवजी भाई को इसी तरह समझाकर पाती देकर भेजा । फिर रामजी भाई को भी पाती लिखकर दी । वे दोनों बिहारी जी के दर्शन करने के लिए चले गए ।

सिवजी पाती दै मिले, जाय के लगे कदम ।
पांच मोहोर खर्च करी, उन निरमल करी आतम ॥१३॥

शिवजी भाई धनवान होने के कारण घोड़े पर सवार होकर जल्दी चला गया तथा पांच मोहरें चरणों में रखकर प्रणाम किया तो बिहारी जी ने आशीर्वाद देकर कहा कि हे शिवजी भाई ! तुम्हारी आतम तो निर्मल परमधाम की है ।

राम जी पाती ले गया, उनको न दिया आवनें ।
पाती ना लई तिनकी, साथ में न दिया पैठने ॥१४॥

राम जी भाई गरीब थे । पगयात्रा करके जब वे वहां पहुंचे तो उन्होंने भी पाती अन्दर भिजवाई । उनके गरीब होने के कारण बिहारी जी ने न तो उनका पत्र स्वीकार किया और न अन्दर प्रवेश करने दिया ।

रोय धोय विनती करी, और तीन किये उपवास ।
दया ना करी किनने, तब टूटी इनकी आस ॥१५॥

रामजी भाई ने रोते-रोते अर्ज (विनती) तो बहुत की, परन्तु किसी ने भी उस पर दया नही की । वह तीन दिन भूखा-प्यासा वहीं बैठा रहा । बिहारी जी ने अन्दर आने की आज्ञा नही दी ।

उन पाती फेर दई, कही अपनी बीतक ।
श्री जी तब दिलगीर भये, दिल में भई सक ॥१६॥

उसने आकर वह पाती श्री जी को वापिस लौटा दी । रामजी भाई की इस बीतक को सुनकर श्री जी को बहुत दुःख हुआ तथा रामजी भाई को बड़ी दिलासा देकर अपने पास रख लिया । तब दिल में शक हुआ कि भले ही बिहारी जी गादी पर बैठ गए हैं लेकिन इन पर श्री राजजी की कुछ भी मेहर नही है।

रहे धारा श्री जी के संग, सो बिहारी जी सुन्या मजकूर ।
कही जिनको हम निकालत, ताए ए ना करत क्यों दूर ॥१७॥

एक तो पहले से ही खंभालिये वाले धारा भाई को श्री जी ने अपने पास रख लिया था तथा दूसरे रामजी भाई को भी अपने चरणों में ले लिया । जब बिहारी जी ने इस बात को सुना तो कहा कि जिनको हम सम्प्रदाय से दूर करते हैं तो मेहराज ठाकुर को भी चाहिए कि वे उन्हें अपने पास न रखें ।

Nijanand App

इन बात की उनके, दिल में रहे सक ।
मेरा हुकम ना मानत, ए आप कहावें बुजरक ॥१८॥

इससे बिहारी जी को श्री जी के प्रति सन्देह हो गया कि ये सुन्दरसाथ में अपनी मान्यता करवाने के लिए मेरे हुकम के उल्टे चलते हैं ।

रामजी को हम काढ़िया, इन तिन को रख्या साथ में ।
ए भली न करी इनों ने, दुख पाया इन बात सें ॥१९॥

बिहारी जी ने रामजी भाई को निकाल दिया था तथा श्री जी ने उन्हें अपने चरणों में ले लिया । बिहारी जी को यह बात बहुत बुरी लगी कि मेहराज ठाकुर ने रामजी भाई को अपने चरणों में लेकर अच्छा काम नही किया ।

तब श्री जी साहिब जी नें सुनी, बिहारी जी पायो बड़ो दुख ।
मैं काढ़ों ताय ए रखें, इन हम सों फेरया मुख ॥२०॥

जब श्री जी ने यह सुना कि बिहारी जी इस बात से दुःखी हैं और मुझे अपने से विमुख समझते हैं कि जिनको वे निकालते हैं, उनको मैं रख लेता हूं ।

तब श्री जी साहिब जी नें कह्या, जो कोई लूला पांगला साथ ।
इन्द्रावती न छोड़े तिनको, पहुंचावे पकड़ हाथ ॥२१॥

तब श्री जी साहिब जी ने इस बात का प्रण लेते हुए कहा कि जो कोई भी असहाय गरीब सुन्दरसाथ होगा, उन सुन्दरसाथ को मैं (श्री इन्द्रावती जी की आतम) अपने चरणों से कभी भी दूर नही करूंगा तथा उनकी आतम को परमधाम लेकर जाऊंगा ।

इन समय गोवरधन, आया अवासी बन्दर से ।
सो भी आये के इत, रह्या भेला साथ मिनें ॥२२॥

ऐसे में गोवर्धन भाई जो आवासी बन्दर में रहते थे, सूरत में आकर श्री जी के चरणों लगे ।

तिन सेवा श्रीजीय की, सिर लई अपनें ।
सब खर्चनें लगा साथ में, सुफल जनम करनें ॥२३॥

वे सेवा करने के लिए आवासी बन्दर से बहुत सारा धन लेकर आये थे जिसे उन्होंने श्री जी के चरणों में रख दिया । इस प्रकार अपना जीवन सफल करने के लिए उसने सेवा का भार अपने ऊपर ले लिया।

Nijanand App

सोर पड़ा सहर में, चरचा को आवे खलक ।
ले दिल में सक आवहीं, कर दीदार होय बेसक ॥२४॥

श्री जी के मुखारविन्द से जाग्रत ज्ञान की चर्चा को सुनकर और अखण्ड ब्रज, रास इस ब्रह्माण्ड में नही वल्कि योगमाया में है, पारब्रह्म परमात्मा इस दुनियां के कण-कण में नहीं वल्कि अखण्ड परमधाम में रहते हैं, ऐसी चर्चा को सुनकर यदि किसी के दिल में कोई सन्देह होता भी था तो श्री जी के चरणों में बैठकर चर्चा सुनने के पश्चात् उनके सब संशय मिट जाते थे ।

भीम स्याम भट्ट सुनी, करने आये दीदार ।
चरचा इत बड़ी भई, उनों किया बड़ा प्यार ॥२५॥

भीम भाई और स्याम भट्ट जो वेदान्त के आचार्य थे । वे भी श्री जी की महिमा को सुन कर दर्शन करने के लिये आये । तब श्री जी ने उनको वेदान्त के अनुसार यह सुनाया कि जहां तक सर्वव्यापी व्याप रहा है, वह मिथ्या है तथा उसका नाश है । ब्रह्म सत्य है जो इससे अलग है । जो चार सूत्र वेदान्त के हैं, यथा १. अहम् ब्रह्मास्मि, २. तत् त्वम् असि, ३. अयमात्मा ब्रह्म, ४. सर्वम् खलु इदम् ब्रह्म, ये चारों सूत्र अखण्ड दिव्य ब्रह्मपुर धाम, जहां एक ही नूरमयी तत्व है, वहां ही लागू होते हैं और जिस मिथ्या जगत में पांच तत्व हैं और नाशवान हैं वहां ये सूत्र लागू नही होते हैं । श्री जी ने बड़े विस्तार के साथ चर्चा सुनायी । उन्हें चर्चा बड़ी प्रिय लगी ।

इन प्यार के बांधे, करने आवें दीदार ।
भयो रस चरचा को, हम समझें परवरदिगार ॥२६॥

इतने प्यार के साथ चर्चा होने के कारण वे भी रोज आने लगे । इस प्रकार उन्हें भी पारब्रह्म तथा परमधाम की पहचान हो गई ।

उनों एक पख वेदान्त का, तिन गुरू सन्यासी संभूनाथ ।
ताय वस्तो गत दूसरा नही, इन चरचा लगे साथ ॥२७॥

भीम भाई तथा स्याम भट्ट दोनों एकमात्र वेदान्त पक्ष के ही आचार्य थे और उनके गुरू शंभूनाथ जी भी एक पक्ष सन्यास मत का ही ज्ञान जानते थे और दूसरे पक्ष का ज्ञान उनके पास नही था । इसलिये वे दोनों श्री जी की चर्चा सुनने आने लगे ।

जो खोज करे आतम की, ताय दिल में न होए विकार ।
सब आतम देखहीं, एही करे करार ॥२८॥

उनको निश्चय हो गया कि जिनके दिल में आतम तत्व की खोज है, वह आत्मदर्शी हो कर सबको एक भाव से देखता है । यह उन्होंने अपने मन में श्री जी के प्रति सोच लिया ।

Nijanand App

ए लगे चरचा समझनें, इत सर्व देसी चरचा होए ।
ताय सुन के अचरज, पावत हैं सब कोए ॥२९॥

अब वे श्री जी के चरणों में चर्चा समझने की दृष्टि से आने लगे क्योंकि श्री जी तो सर्वदेशी अर्थात् सर्व ग्रन्थों के अनुसार चर्चा करते थे । इस बात पर उन दोनों को तथा सबको बहुत आश्चर्य होता था।

वेदान्त की चरचा, वह तो जानत सब ।
ए चरचा तिन ऊपर, और कोई नहीं मतलब ॥३०॥

वेदान्त पक्ष की चर्चा तो भीम भाई और स्याम भाई जानते थे इसलिये वे जानते थे कि इनकी चर्चा का ज्ञान वेदान्त से बहुत ऊपर का है । श्री जी की चर्चा केवल आत्म तत्व पर ही समभाव से होती है जिसमें उनका कोई स्वार्थ नही है ।

ए सुन के स्याम भट्ट, करनें लगा विचार ।
भीम भाई को कह्या, तुम हूजो खबरदार ॥३१॥

श्री जी की इस चर्चा को सुन कर स्याम भट्ट विचार करने लगा तथा उसने भीम भाई को कहा कि तुम सावधान होकर चर्चा सुनो ।

वेदान्त के खोज की, इनों से छिपे नही सुकन ।
तिन ऊपर बतावत, ए कौन राह रोसन ॥३२॥

वेदान्त पक्ष की कोई भी बात आचार्य होने के कारण इनसे छिपी नही थी । वेदान्त का ज्ञान तो केवल निराकार तक का है । श्री जी तो उससे भी परे का ज्ञान सुना रहे हैं यह किस पंथ का ज्ञान है जिसमें वह वेदान्त से भी परे का ज्ञान सुना रहे हैं ।

एह विचार करते, भीम की खुली नजर ।
ए तो अक्षर पार के, नजरों आई फजर ॥३३॥

यह विचार करते-करते भीम भाई की आतम जागृत हो गई तथा क्षर से परे अक्षर और अक्षरातीत की पहचान हो गई ।

आपन थे व्यापक लों, जानी सूरत एक ।
जब नींद उड़ी अक्षर की, ए जो फैली उड़ी अनेक ॥३४॥

तब स्याम भाई ने भीम भाई से कहा कि हम सब तो केवल व्यापक को ही परमात्मा का रूप मान बैठे थे । ये जो चारों तरफ चारों ओर फैला हुआ संसार है वह अक्षर ब्रह्म के एक क्षण में मिट कर नाश हो जायेगा ।

Nijanand App

ए तिन अक्षर के पार की, लीला बताई अखण्ड ।
त्रिगुन विष्णु महाविष्णु की, बोय न लोक ब्रह्मांड ॥३५॥

पर श्री जी तो अक्षर से भी परे अक्षरातीत के परमधाम तथा वहां की लीला का वर्णन सुनाते हैं । उस परमधाम का तो ब्रह्मा-विष्णु-शिव के इस झूटे संसार में किसी को एक शब्द का भी ज्ञान नही हैं।

भीम की नजर खुली, जाय पहुंची लीला मों ।
तब आये कदमों लगा, अपनें कबीले सों ॥३६॥

यह सुनकर भीम भाई की भी आतम जागृत हो गई तथा उसकी सुरता भी अखण्ड परमधाम में पहुंच गई । तब दोनों ने अपने परिवार सहित श्री जी के चरणों में आकर तारतम ले लिया ।

पहिले गुरू से तोड़ के, आया बीच निजधाम ।
चरचा का सुख पाए के, रहूया मोमिनों के काम ॥३७॥

पहले गुरू शंभूनाथ को छोड़कर वे श्री निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हो गए । फिर श्री जी की चर्चा को सुनकर वे सुन्दरसाथ की सेवा में ही समर्पित हो गए ।

एक व्यास गोविन्द जी, रहे वल्लभी मारग में ।
उनने चरचा सुनी, भागवत के बचनों सें ॥३८॥

सूरत में राधा वल्लभी मत के आचार्य गोविन्द व्यास जी रहते थे । उन्होंने भी यह सुना कि श्री जी भागवत के छिपे रहस्यों पर चर्चा करते हैं ।

इन समय भागवत की, मारग बल्लभाचारज ।
तिनके टीका मिने, था सैंयों का कारज ॥३९॥

क्योंकि उस समय राधा वल्लभी मत में वल्लभाचार्य की सुबोधिनी टीका में वल्लभाचार्य ने ब्रह्मसृष्टियों की महिमा का खूब वर्णन किया था ।

इनकों कछु ना खुलहीं, चालीस प्रस्न तिन में ।
सो लिख के धर उतारिए, ए लिया चाहिये इन सें ॥४०॥

पर गोविन्द व्यास जी को सुबोधिनी टीका के भेदों की समझ नही आती थी इसलिए उसने घर पर ४० प्रश्नों को टीका में से लिखा और दिल में सोचा कि इन प्रश्नों का उत्तर श्री जी से लेना चाहिए ।

Nijanand App

ए जो दलाल वल्लभ, रहे अपने साथ ।
सो मेहनत कर ल्याइया, आन दई श्री जी के हाथ ॥४१॥

अपने एक सुन्दरसाथ वल्लभ भाई दलाल थे, जो पहले वल्लभाचार्य मत के व्यास जी के शिष्य थे । गोविन्द व्यास जी ने वल्लभ भाई से कहा कि तुम अपने स्वामी जी से इन प्रश्नों का उत्तर दिलवा दोगे तो मैं भी उनके चरणों में अपना शीश रख दूंगा । तब वह व्यास जी को अपने साथ लाए । उन्होंने वे ४० प्रश्न श्री जी के हाथ में दे दिए और कहा कि हे श्री जी ! यदि आप इन प्रश्नों का उत्तर दे देंगे तो व्यास जी भी आपके चरणों में आ जांएगे ।

तिन प्रस्नों की चरचा, कहवाई गोविन्द जी के मुख ।
तिनको तिनसे समझाइया, तिन पाया बड़ा सुख ॥४२॥

तब श्री जी ने कृपा करके गोविन्द व्यास जी के द्वारा उन प्रश्नों के भेद खुलवाये तथा उनको श्री मद्भागवत से ही जब समझाया तो उनकी आतम जागृत हो गई तथा सब प्रश्नों के भेद खुल गये ।

सो तबहीं कदमों लगा, आया साथ मिने ।
तब दज्जाल के लसकर के, लगे निंदा करने तिन से ॥४३॥

गोविन्द व्यास जी को जैसे ही ४० प्रश्नों के भेद खुल गये तो तुरन्त वे श्री जी के कदमों में झुक गये तथा तारतम लेकर सुन्दर साथ में शामिल हो गये । राधा वल्लभी मार्ग के अनुयायियों ने जब यह सुना कि उनके आचार्य भी निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हो गये हैं तो उनको बहुत बुरा लगा और वे बहुत निन्दा करने लगे ।

एह कीर्तन हुये तिन पर, मीठी वल्लभाचारज बान ।
कोई भली बुरी कहने लगे, काहू काहू भई पहिचान ॥४४॥

तब श्री जी को वल्लभाचार्य मार्ग के लिये वल्लभी टीका पर एक किरंतन उतरा । उसकी चर्चा सुनकर कुछ को तो अखंड ब्रज रास तथा उसके परे अक्षरातीत की पहचान हो गई तथा कुछ भली बुरी बातें भी कहने लगे ।

प्रमाण : वचन विचारों रे, मीठड़ी वल्लभाचारज वानी ।
अर्थ लिए बिना ए रे अंधेरी, करत सबों को फानी ।

(किरंतन, प्रकरण १२, चौपाई १)

Nijanand App

कोई आवे लड़ने, कोई आवे निन्दक ।
जब पावे दीदार, तब सुकर कहवे हक ॥४५॥

किरंतन की इस चर्चा को सुनकर वल्लभाचार्य मार्ग के कुछ अनुयायी निन्दा के लिये आते हैं परन्तु जब श्री जी के मुखारबिन्द से जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान के द्वारा सब भेदों को समझते हैं तो परमात्मा का शुक्र बजाते हैं ।

इनकी निंदा जो करे, सो होवे ख्वार ।
ए तो साध बड़े हैं, हैं तरफ धनी निरधार ॥४६॥

वे स्वयं ही कहने लगते हैं कि जो श्री जी की निन्दा करेगा वह जलील होकर बर्बाद होगा । ये बहुत महान पुरूष हैं तथा अक्षरातीत सच्चिदानन्द परमात्मा के ज्ञान की सच्ची राह पर चल रहे हैं ।

मानिक आवे दीदार को, सोहबत संग भगवान ।
इनको चरचा सुनते, होय गई पहिचान ॥४७॥

इस समय भगवान भाई की सोहोबत से मानिक भाई आता है । श्री जी के मुखारबिन्द से चर्चा सुनके उसको पहचान हो गई तथा वह भी सुन्दरसाथ में शामिल हो गया ।

बिहारी जी इन समें, पाती लिख भेजे कलाम ।
तीन बात का बन्धेज, हम किया इस ठाम ॥४८॥

जब बिहारी जी को इस बात की सूचना मिली कि सूरत में बड़े-बड़े वेदान्ताचार्य श्याम भाई, भीम भट्ट तथा वल्लभाचार्य मत के आचार्य गोविन्द व्यास जी श्री जी के मुखारबिन्द की चर्चा सुनकर निजानन्द सम्प्रदाय के अनुयायी हो गये हैं तो अपने हजूरी नागजी भाई से विचार-विमर्श किया कि मेहेराज ठाकुर को अपने साथ ही रखना उचित है तथा अपना काम चलता रहेगा । तब बिहारी जी ने अपनी सांसारिक बुद्धि से गादी के महन्त होने के नाते से श्री निजानन्द सम्प्रदाय को उज्जवल रखने के उद्देश्य से तीन नियम बनाये तथा श्री जी को पत्र में ही वह नियम लिखकर भेजे कि इन नियमों का पालन हमने नवतनपुरी में शुरू कर दिया है ।

सो तुम भी कीजियो, ए बात बहुत सिरे ।
ए बात तुम उत करो, तो इत भी आन फिरे ॥४९॥

ये तीनों नियम बहुत ऊंचे है जो मैनें बनाये हैं । उन्हें आप भी अपने सुन्दर साथ में लागू कीजिएगा ताकि सुन्दर साथ का भाव नवतनपुरी पर बना रहे ।

Nijanand App

एक तो नीच जात को, सुनाइयो नहीं तारतम ।
दूजे रांड स्त्रीय को, तीजे कहें हम तुम ॥५०॥

वे तीन नियम इस प्रकार हैं, नीच जाति वाले व्यक्ति को तारतम नही सुनाना, विधवा स्त्री को कभी भी तारतम नही देना, एवं हमारे और तुम्हारे सिवाय अन्य किसी को भी तारतम देने का अधिकार नही होगा ।

एह तीन बात को, जहूर कीजो उत ।
धर्म उज्जवल देखियो, कोई करे न निन्दा कित ॥५१॥

बिहारी जी ने लिखा था कि अपने धर्म को उज्जवल करने के लिए इन तीनों नियमों को वहां सब पर लागू करना ताकि कल को कोई हमारे सम्प्रदाय की निन्दा न करे ।

ए बात पाती की सुन के, श्री जी लिखी खबर ।
तुम बाहिर दृष्ट छोड़ के, देखो अन्तर की नजर ॥५२॥

ऐसे व्यर्थ के नियमों वाली पाती को सुनकर श्री जी ने बिहारी जी को अपने कर-कमलों द्वारा उत्तर दिया कि हे गादीपति जी महाराज ! चर्म दृष्टि को छोड़ कर अपनी आत्मिक दृष्टि खोल कर देखिए ।

जवाब तीन बात का, हम तुम्हें लिखों बनाए ।
ताको विचार कीजियो, श्री देवचन्द्र जी राह चलाए ॥५३॥

तीनों नियमों के विरूद्ध उत्तर देते हुए श्री जी ने लिखा कि श्री निजानन्द सम्प्रदाय को सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने चलाया है न कि तुमने । नियम बनाने का अधिकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक को होता है, अन्य किसी को नही । आपकी तीनों बातों का मैं उत्तर दे रहा हूं उस पर विचार कीजिएगा ।

उननें जात भेष को, भान डारया सीस ।
देख्यो जित अंकूर को, तित करी बखसीस ॥५४॥

सतगुरू श्री धनी देवचन्द्र जी ने सबसे पहले जाति-पाति के भेदों को मिटाया था । जिस जाति के व्यक्ति के अंदर वह परमधाम की आतम का अंकूर देखते थे उसे तारतम देकर श्री निजानन्द सम्प्रदाय में दाखिल करते थे ।

सो देखो तुम जाहिर, खोजी बाई मुसलमान ।
और ओ स्त्री रांड थी, बखस्यो रही बाई वासना जान ॥५५॥

इस बात का प्रमाण आपके सामने है कि खोजी बाई एक यवन (मुसलमान) स्त्री थी तथा विधवा भी थी । आप सतगुरू श्री देवचन्द्र जी ने परमधाम की रई बाई की वासना परख कर तारतम दिया और सुन्दर साथ में शामिल किया ।

Nijanand App

सो ए बात तुम देखी है, उनकी दृष्ट जात भेष पर नाहिं ।
जित देखो अंकूर धाम को, गिनो ऊंच नीच न ताहिं ॥५६॥

यह बात आपने अपनी आंखों से देखी है । सतगुरू श्री देवचन्द्र जी की दृष्टि जाति-पाति के भेद पर नही थी । इसलिए आप भी जहां परमधाम के अंकूर को देखना तो वहां जाति-पाति के भेद को मत देखना।

और उनने ए कही, ए लीला आई अखण्ड ।
या लीला के प्रताप तें, होए बका ब्रह्माण्ड ॥५७॥

सतगुरू श्री देवचन्द्र जी ने यह बात कही थी कि जागृत बुद्धि के इस तारतम ज्ञान से चौदह लोकों का यह सारा ब्रह्मांड अखंड होना है ।

सो हम तुम वस्त को, कहाँ लो कहते फिरें ।
जिनको पहुंचे तारतम, सोई प्रकास करे ॥५८॥

इसलिए यदि केवल हम और आप दोनों को ही तारतम देने का अधिकार रखा तो हम कब तक जीयेंगे और कहां तक प्रचार होगा । इसलिए जिसको भी तारतम के ज्ञान से श्री राजजी के स्वरूप की पहचान हो जाये तो वह उस ज्ञान को जाहिर करे ।

जित होए अंकूर निजधाम को, गिनिये ऊंच नीच न तित ।
ए राह श्री देवचन्द जीयें, कही आतम दृष्ट की इत ॥५९॥

श्री देवचन्द्र जी ने फुरमाया था कि जिस तन में परमधाम की आतमा का अंकूर हो तो उस तन की नीच-ऊंच जाति को कभी भी नही देखना । उन्होंने तो हमें आत्म तत्व का ज्ञान लाकर दिया है ।

सोई लिखी वेद पुरान में, जहाँ भक्त प्रगट होई ।
तिनकी जात पात न देखिए, ए बैकुण्ठ वालों की राह सोई ॥६०॥

यह बात तो वेद पुराण में भी कही है कि जिस तन में भगवान का भक्त प्रगट हो तो उसकी जाति-पाति को कभी न देखना और उनका मार्ग तो केवल बैकुण्ठ का ही होता है ।

ए राह श्री देवचन्द्र जीयें, हमको तुम आगे दई दिखाई ।
सोई तुम सब साथ को, अब वोही देओ बताई ॥६१॥

यह हमारे और तुम्हारे सामने ही सतगुरू धनी श्री देवचन्द्र जी ने करके दिखाया था । आप भी वही कीजिए जो श्री देवचन्द्र जी ने बताया था ।

Nijanand App

तो राह ए चलसी, होए बड़ो प्रकास ।
साथ सब दौड़सी, ले दिल जागनी की आस ॥६२॥

सतगुरू श्री देवचन्द्र जी के बताये हुए नियमों पर यदि हम चलेंगे तो इस सम्प्रदाय का बहुत बड़ा प्रचार होगा । तब सब सुन्दर साथ अपनी आतम को जगाने के लिए दौड़-दौड़ कर आयेंगे और इस सम्प्रदाय में शामिल हो जायेंगे ।

साथ सबे उतरयो, चारों वर्णों माहिं ।
ए बन्धेज बांधे से, होए अकारज ताहिं ॥६३॥

परमधाम की सब आत्मायें चारों वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्रों में उतरी हैं । यदि हम जाति-पाति के भेद से नियम बनायेंगे तो अपने सम्प्रदाय का प्रचार प्रसार ठप्प हो जायेगा ।

इन भांत की हकीकत, लिखों जवाब बिहारी जी ऊपर ।
और भेजी किताब कलस की, लेने मसनंद खबर ॥६४॥

इस प्रकार से बिहारी जी की पाती का उत्तर देकर हकीकत का सारा ज्ञान उनको बताया । बिहारी जी की भ्रान्ति और अभिमान हटाने के लिए कलश किताब भेज दी, जिसकी चौपाई से यह सिद्ध हो जाता है कि श्री राजजी महाराज किस तन में हैं । उनकी बैठक मोमिनों का दिल है या रूई की गादी ?

प्रमाण : इन्द्रावती के मैं अंगे संगे, इन्द्रावती मेरा अंग ।
जो अंग सौंपे इन्द्रावती को, ताए प्रेमें खेलाऊं रंग ॥

(क० हि०, प्रकरण २३, चौपाई ६६)

सुन के बिहारी जी नें, बड़ो पायो दुःख तब ।
न मानों कलस को, देखी पाती जब ॥६५॥

श्री जी की इस पाती को पढ़कर बिहारी जी को बहुत दुःख हुआ । कलश ग्रन्थ को पढ़कर वह भड़क उठे कि धाम का धनी मैं हूं । मेहराज ठाकुर के अन्दर धाम धनी कैसे बैठ सकते हैं । मैं इस किताब को नही मानता ।

उन लिख भेजी पातीय को, तुम्हारी राह भई और ।
और हमारी भी और है, भई जुदागी इस ठौर ॥६६॥

तब बिहारी जी ने पाती का उत्तर लिख कर भेजा कि हे मेहराज ठाकुर ! तेरा और मेरा अब कोई वास्ता नही है । मेरा और तुम्हारा रास्ता जुदा-जुदा है ।

Nijanand App

हम तो तुमको चीन्हया, तुम्हारे माहें कलाम ।
तुम नही हमारे साथ में, हम काढ़ें तुम्हें इस धाम ॥६७॥

मैं तुम्हें अच्छी तरह से पहचान गया हूं तुम एक कवि हो तथा मनगढ़न्त कविता बनाते रहते हो । जब तुमको मेरे ऊपर विश्वास ही नही है कि मैं धाम धनी हूं तो तुम कैसे हमारे सुन्दर साथ हो ? मैं भी तुम्हें आज साफ कह देना चाहता हूं कि मैंने आज चितवनी से देखा है कि तुम्हारी परआतम मूल मिलावे में नही है इसलिए तुम्हें परमधाम से निकाल दिया ।

हम जिन साथ को काढ़िया, क्यों तिन को लिया बीच दीन ।
तो इत तुमको हमारा, छूट गया आकीन ॥६८॥

मैं जिस सुन्दर साथ को निकालता हूं तुम उसी को अपने पास रख लेते हो । तो अब यह स्पष्ट जाहिर है कि तुमको मेरे ऊपर यकीन नही है । न मैं तुम्हारा धाम का धनी और न तुम मेरे सुन्दर साथ हो ।

तिस वास्ते हम तुमको, किए साथ से दूर ।
हमारे तुमारे नाता न रह्या, जिन पाती करो मजकूर ॥६९॥

इस वास्ते मैं तुमको सुन्दर साथ से दूर करता हूं । मेरा और तुम्हारा आज से कोई नाता नही रहा । अतः तुम मेरे पास कोई भी पत्र नहीं लिखना ।

इन भाँत पाती लिखी, आए पहुंची सूरत ।
तब श्री जीयें विचारिया, ऐसा हुआ बखत ॥७०॥

इस प्रकार की चिट्ठी जब सूरत पहुंची तथा श्री जी ने पढ़ी तो श्री जी ने दिल में सोचा कि मुझे विश्वास नही था कि बिहारी जी मुझे ऐसे गिरे हुए शब्द लिख देंगे ।

ऐसा तो न चाहिये, जो हमको ऐसे लिखे सुकन ।
हमसे तकसीर ना पड़ी, ए काम नही सैंयन ॥७१॥

श्री जी अपने मन में विचार करते हैं कि बिहारी जी को मुझे ऐसा पत्र नहीं लिखना चाहिये था । मेरे से कोई ऐसी भूल भी नही हुई है । यह जो इन्होंने कार्य किया है यह ब्रह्मसृष्टि के लक्षण नही हैं ।

इन समें सब साथ ने, करी ए मसलहत ।
बैठे श्री देवचन्द्र जी किनके हिरदे, तुम तौल देखो इत ॥७२॥

जब सूरत में रहने वाले सभी सुन्दर साथ को पता चला तो उन्होंने मिलकर विचार-विमर्श किया कि इस समय हमको यह देखना चाहिए कि श्री देवचन्द्र जी की बैठक किन के हृदय में है ।

Nijanand App

कही ए श्री जी साहिब जी सों, तुम लेओ हक सिर काम ।
साथ को जमा करना, बीच दीन इसलाम ॥७३॥

तब सब सुन्दर साथ ने इस बात की हकीकत की पहचान कर श्री जी के चरणों में आकर अर्ज (विनती) की कि हे धाम धनी ! सब साथ को जगाकर श्री निजानन्द सम्प्रदाय में लाने का कार्य जो श्री राजजी महाराज के हुकम से धनी देवचन्द्र जी ने आपको सौंपा है आज से अपने सिर पर लेकर खड़े हो जाइये। हम सब आपके साथ हैं ।

कोई उनसे साथ में, ल्याया नही ईमान ।
चरचा राज की करके, काहू न भई पहिचान ॥७४॥

हमने पहचान लिया है कि श्री राजजी महाराज-श्यामा महारानी आपके हृदय में विराजमान हैं । खाली गद्दी पर बैठ जाने से क्या होता है । यदि धनी देवचन्द्र जी की थोड़ी भी मेहर होती तो वह ऐसा नही करते । आज दिन तक उनके द्वारा वाणी चर्चा सुन कर कोई भी नया सुन्दर साथ नही जागा । उन्होंने किसी को भी श्री राजजी की चर्चा नही सुनाई और न ही किसी को परमधाम की पहचान कराई ।

जिनको तुम समझाए के, भेजत हो उन तरफ ।
सो विकार पाए के, खाए आवत सब सक ॥७५॥

बल्कि जिस-जिस को आपने जाग्रत बुद्धि के तारतम ज्ञान से धाम धनी श्री राज जी और परमधाम की पहचान कराई और बिहारी जी महाराज के दर्शन के लिए नवतनपुरी भेजा, वह बिहारी जी के व्यवहार से विमुख होकर आया ।

अब तुम क्या देखत, नजर करो तरफ धाम ।
लेओ तुम सिर आपने, दीन इसलाम का काम ॥७६॥

अब आप परमधाम मूल मिलावे में विराजमान श्री राजश्यामा जी के चरणों का ध्यान करके सुन्दर साथ की जागनी का भार अपने ऊपर ले लीजिए ।

साथ सब लागू हुये, आगा किया भाई भीम ।
चरचा करके सिर ले, लिया जस अजीम ॥७७॥

इस कार्य में भीम भाई आगे हुए तथा सब सुन्दर साथ ने सर्वसम्मति से पहचाना कि श्री राजजी महाराज की बैठक आपके अंदर है । तब सब धाम के धनी का जयकारा बोलते हुए श्री जी के चरणों में समर्पित हो गए तथा सब सुन्दर साथ ने उनको धाम का धनी मान लिया तथा उस दिन से नवतनपुरी से सम्बन्ध तोड़ दिया ।

Nijanand App

तब पाती का जवाब, लिख भेजे कलाम ।
तुम हमको काढ़े साथ से, हम सिर पर लिया काम ॥७८॥

तब गादी अभिषेक होने के पश्चात् श्री प्राणनाथ जी ने अपने कर-कमलों द्वारा विहारी जी के पत्र का उत्तर दिया कि विहारी जी ! आपने मुझे जो सुन्दर साथ से निकाला है आज से मैंने श्री राजजी महाराज के चरणों का आसरा लेकर सतगुरू धनी देवचन्द्र जी के द्वारा दिया हुआ कार्य अपने सिर पर ले लिया है । आज से मैं किसी भी सुन्दर साथ को नवतनपुरी नही भेजूंगा और आपसे कोई पत्र व्यवहार नही करूँगा।

जो हम स्वारथ को, दौड़ करेंगे इत ।
तो सीधा कबहूं न होएगा, हम जायेंगे तित ॥७९॥

यदि मैं किसी स्वार्थ या मान-सम्मान के लिए धर्म कार्य हेतु जाऊँगा तो मेरा कभी भी कोई कार्य सिद्ध नही होगा ।

और साथ के वास्ते, जो हम करत मेहनत ।
तो हमारे सीधा होयगा, नजीक है साइत ॥८०॥

मैं सुन्दर साथ की जागनी के लिए परिश्रम कर रहा हूं । यदि जागनी के कार्य के लिए निकलूंगा तो सब स्थानों पर कार्य सीधा होता जायेगा । जागनी का निश्चित समय नजदीक आ गया है ।

इन भांत का जवाब, पाती में लिखे कलाम ।
हम तो कमर बांधी, श्री निजधाम के काम ॥८१॥

इस प्रकार का उत्तर लिख कर पाती में यह भी लिख दिया कि मैंने धाम के धनी श्री राजजी के कार्य के लिए कमर बांध ली है ।

इन समय लालदास, साथ आया ठट्ठे से ।
सुदामा पुर पहुंचिया, कहों बीतक तिन सें ॥८२॥

अब आप श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि इस वक्त श्री लालदास जी ठट्ठे से चल कर सुदामापुर (पोरबन्दर) पहुंचे । फिर वे किस तरह सूरत में पहुंचे अब उनकी बीतक लिखता हूं ।

सम्बत् सत्रह सताईसे, पहुंचे सुदामा पुर ।
तहां भीम पीताम्बर मिले, हुई चरचा तिन ऊपर ॥८३॥

संवत् १७२७ में लालदास जी ठट्ठे नगर से पोरबन्दर पहुंचे तो वहां उनकी मुलाकात भीम और पीताम्बर से हुई । तब वहां लालदास जी ने उनके साथ चर्चा की ।

Nijanand App

कछुक इन टट्टे मिने, चरचा देखी जब ।
वहां दोऊ लागू भये, सुनायो तारतम तब ॥८४॥

भीम और पीताम्बर भाई ने टट्टे नगर में कुछ चर्चा सुनी थी । अब लालदास जी ने दोनों को अच्छी तरह पहचान करा दी एवं तारतम दिया और दोनों सुंदर साथ में शामिल हो गए ।

कोइक दिन पीछे उने, सुनायो श्री तारतम ।
ए दोऊ जने तबहीं, सौंप चुके आतम ॥८५॥

कुछ दिन चर्चा सुनने के पश्चात् जब उन दोनों ने श्री लालदास जी से तारतम ले लिया यह दोनों भाई तभी से अपनी आतम श्री जी के चरणों में सौंप चुके थे ।

तब दज्जाल इन समें, लगा जो करने सोर ।
विठलेस गुसांई के, लगे निंदा करने जोर ॥८६॥

अब इधर सूरत में गोविन्द व्यास जी सुन्दरसाथ में शामिल हो गए, तब उनकी गादी पर विठलेस गोसांई जी बैठे तब उस पन्थ के लोग श्री जी की निन्दा करने लगे ।

वल्लभी मारग में, खड़ भड़ पड़ी उत ।
ए कौन मारग पैदा भयो, ए चलें सेवक इत ॥८७॥

वल्लभी मार्ग के अनुयायियों में यह खलबली मच गई कि यह निजानन्द सम्प्रदाय कहां से चल गया।

हमारो तो बड़ों मारग, चारों खूंटों रोसन ।
तिन भांत के और को, बतावत साधुजन ॥८८॥

हमारा राधा वल्लभी मार्ग तो देश के चारों खूंटों में प्रसिद्ध है । ऐसा गोसांई जी अपने धर्म की इस प्रकार की महिमा बताकर श्री निजानन्द सम्प्रदाय की निन्दा करते हैं ।

श्री राज के दर्सन की, चरचा होवे जोर ।
दज्जाल तिनकी करे, अपनी सिपाह में सोर ॥८९॥

और वे क्या प्रचार करते हैं कि श्री निजानन्द सम्प्रदाय वाले कहते हैं कि हमें श्री राजजी के दर्शन होते हैं । इसके विरूद्ध वे अपने अनुयायियों में खूब जोर-शोर से प्रचार करते थे ।

Nijanand App

धरम उंदरियों पैदा भयो, पांव बांधत घूंघरी ।
थाल धरे परदा करें, देखो ऐसी राह चली ॥९०॥

निजानन्द सम्प्रदाय वाले जब भोग के लिए थाल रख देते हैं तो चुहिया (उंदरियों) के पैरों में घूंघरी बांध देते हैं और परदा लगा कर तब चुहिया को छोड़ देते हैं। जब वह खाती हैं तो कहते हैं कि मेरे घर श्री राजजी आये हैं। यह सम्प्रदाय चुहिया को भगवान मानने वाला सम्प्रदाय है। आज से तुम वहां न जाना, नही तो चुहिया का जूठा खाना पड़ेगा।

कहें हमारे घरों, श्री कृष्ण जी पधारत ।
सो अरूगाय के, एही राह चलावत ॥९१॥

निजानन्द सम्प्रदाय के लोग कहते हैं कि हमारे घर साक्षात् श्री कृष्ण जी आते हैं। हम उनको ही भोग लगाते हैं, इस प्रकार यह झूट के आधार पर अपना धर्म चलाते हैं।

इन भाँत सहर में, निंदा निस दिन होय ।
पूछे प्रस्न भागवत के, ताको अरथ न कहवे कोय ॥९२॥

इस प्रकार राधा वल्लभी मार्ग के गुसांई जी और उनके अनुयायी हर रोज निन्दा ही करते रहते हैं और यदि राधा वल्लभी मार्ग के गुसांई जी से ४० प्रश्न पूछे जाते हैं तो वे उनका उत्तर नही दे पाते हैं।

काहू को सांची भासे, कोई चरचा सुन होवे गलित ।
कोई अस्तुति करे, जो देखे आये के तित ॥९३॥

जब राधा वल्लभी मार्ग के लोगों को इस बात का पता चलता है कि हमारे गुसांई जी भागवत के ही प्रश्नों का उत्तर नही दे पाते तो हमें श्री जी की चर्चा सुननी चाहिए। जब वे अखंड ज्ञान की चर्चा सुनते हैं तो संशय रहित जाते हैं, वही लोग श्री जी की स्तुति करते हैं।

रब्द प्रस्न चरचा का, रात दिन उत होय ।
जवाब काहू न आवहीं, क्यों उत्तर देवें सोय ॥९४॥

रात-दिन वहां प्रश्नों को लेकर चर्चा और वाद-विवाद होते रहते हैं। किन्तु विरोधी लोग अपने धर्म ग्रन्थ श्रीमद्भागवत के प्रश्नों का उत्तर नही दे पाते और मौन हो जाते हैं।

Nijanand App

यों करते लोग इन समें, लगे चरचा सुनने को ।
गोपी साथ में आइया, खेमजी जोसी इन मों ॥९५॥

इस प्रकार से जब लोग श्री जी की चर्चा सुनने लगे तो जिनको ईमान आया उनके नाम कहता हूं। गोपी भाई, खेम जी और जोशी भाई ने तारतम लिया ।

दामा और सूरचन्द्र, और वस्ता नाम ।
लालबाई धनियानी, भए दाखिल निजधाम ॥९६॥

दामाभाई, सूरचन्द्र भाई, वस्ता भाई तथा उनकी धनियानी लालबाई भी सुन्दर साथ में शामिल हुईं।

इहाँ होय चरचा उच्छव, आया इत प्रधान ।
और आया मसकत से, महाव का बेटा कान ॥९७॥

इस प्रकार जब चर्चा और उच्छव हो रहे थे तो सैयदपुर के प्रधान ने भी तारतम लिया और मसकत बन्दर से महाव जी के बेटे कान्ह जी भी आये ।

यों एक गांठ होय चली, आवने लगा नया साथ ।
सोई चरचा सुनत हैं, जाके धनिये पकड़े हाथ ॥९८॥

इस प्रकार सुन्दर साथ की एक जमात बन गई । नए सुन्दर साथ भी आने लगे । जिस पर श्री राजजी की मेहर होती है वे ही चर्चा सुनने आते हैं ।

लाल दास को इन समें, भई माया की उरझन ।
इनको राजें काढ़ के, चाहिये कदमों पहुंचे मोमिन ॥९९॥

श्री राजजी महाराज ने देखा कि लालदास जी को इस समय श्री जी के चरणों में पहुंचना चाहिए । इसलिए लालदास जी को माया का बहुत बड़ा धक्का लगा । माल के भरे उनके सात जहाज समुद्र में डूब गए और उसी रात उनके गोदामों में आग लग जाने से उनका बहुत नुकसान हुआ ।

तब माया की तरफ का, हुआ धक्का जोर ।
दज्जालें जोरा किया, ऊपर करने लगा सोर ॥१००॥

इस प्रकार उनका दिवाला निकल गया । ऐसे घोर संकट में पैसे देने वाले तो चले गए तथा लेने वाले हुंडियां लेकर आ गए ।

Nijanand App

जब कछु न रह्या हाथ में, तब माया दिया छोड़ ।
तब नजर करी तरफ राज के, चित माया से लिया मोड़ ॥१०१॥

बची धन सम्पति से वह लेने-देने वालों को धन देकर जान छुड़ा कर चल दिए । जब कुछ भी नही बचा तो घर छोड़ कर चित्त धनी के चरणों में लगा दिया ।

अन्न का नेम लिया, जब मैं करों दीदार ।
नवतनपुरी जाय के, देखों धनी निरधार ॥१०२॥

उन्होंने प्रण ले लिया कि जब तक धाम के धनी बिहारी जी के दर्शन नही कर लूंगा तब तक अन्न का भोजन नही करूँगा ।

तब लों अनाज ना लेऊं, तोलो करों फल आहार ।
इन भांत चलने लगे, ऐसा किया विचार ॥१०३॥

तब तक मैं अन्न नही ग्रहण करूँगा और फल खाकर ही निर्वाह करूंगा । इस प्रकार की प्रतिज्ञा करके चल पड़े ।

जब मगरोल पाटन, आये पहुंचे इत ।
तहाँ दज्जाल बैठा था, कहे तुम जाओ सूरत ॥१०४॥

जब ठट्ठे नगर से चल कर मगरोल पाटन पहुंचे तो वहां पर इनको कुछ सुन्दर साथ मिले और कहा कि तुम सूरत श्री जी के चरणों में जाओ ।

बहुत रद बदल भई, माने नही सुकन ।
तब देखा तरफ श्री राज की, हुई आज्ञा ऊपर सैयन ॥१०५॥

आपस में उन सुन्दर साथ की तथा लालदास जी की बातचीत हुई, उनका कहना नहीं माना । जब वे चलने लगे तो यह सोच कर जो श्री राजजी करेंगे ठीक करेंगे ।

तब उहाँ से दीप आये, तहां रहे पन्द्रह दिन ।
साथ सों मुलाकात करी, फेर घोघे पहुंचे ततखिन ॥१०६॥

दीप बन्दर में पन्द्रह दिन रह कर सब साथ से मुलाकात हुई तथा सब बात की जानकारी करके वहां से घोघे ततखिन पहुंचे ।

Nijanand App

तहाँ से नाव चढ़ के, आये बन्दर सूरत ।
सम्बत् सत्रह सौ उन्तीसे, इहाँ आय पहुंची सरत ॥१०७॥

तब घोघे से नाव चढ़कर सूरत आ पहुंचे । सम्वत् १७२९ में श्री लालदास जी सूरत पहुंचे ।

आय के श्री जी साहिब जी के, लगे दोऊ कदम ।
नेम था अनाज का, सौंपी थी आतम ॥१०८॥

लालदास जी ने आकर श्री जी के चरणों में प्रणाम किया । उन्होंने धाम के धनी के दर्शन करके ही अनाज का भोजन लेने का नियम ले रखा था । इसलिये भोजन का आदर करने पर भी भोजन नही लिया।

श्री जी अपने चित्त में, बड़ो पायो सुख ।
प्रसाद लेओ उठो अब, यों कह्या श्री मुख ॥१०९॥

लालदास जी को देखकर श्री जी अपने चित्त में बहुत प्रसन्न हुए तथा कहा हे लालदास जी ! उठो भोजन करो ।

तब लालदासें कह्या, हमको अगड़ है अनाज ।
जाऊं बिहारी जी के कदमों, अनाज छोड़े तिन काज ॥११०॥

तब लालदास जी ने कहा कि मैंने धाम के धनी बिहारी जी के दर्शन करने का प्रण कर रखा है । उनके दर्शन किए बिना भोजन नहीं करूंगा ।

तब आप श्री मुख कह्या, भया पूरा तुम्हारा पन ।
कछु फिकर ना करो, पहुंचे मिलावे सैयन ॥१११॥

तब आप स्वामी जी ने अपने श्री मुख से कहा कि आपका वह प्रण पूरा हो गया है आप धाम धनी श्री राजजी तथा सुन्दर साथ के चरणों में पहुंच गए हैं ।

Nijanand App

महामति कहे ऐ मोमिनों, ए सरत करो याद ।
फेर लाल आगे की कहों, जो झगड़े को बुनियाद ॥११२॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे साथ जी ! सूरत के इस प्रसंग को हमेशा याद रखना । श्री लालदास जी कहते हैं, अब आगे के झगड़े में क्या-क्या हुआ उसकी बात कहता हूं ।

(प्रकरण ३१, चौपाई १४६२)

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! श्री जी बार-बार बिहारी जी के प्रति गुरूपुत्र होने के नाते से अपने मन में भाव बनाये ही रखते थे । पर बिहारी जी के पास जागृत बुद्धि का ज्ञान न होने से गादी पर बैठने के बाद अपने को ही पूर्णब्रह्म मान बैठे थे और इस अहं में आकर गरीब सुन्दरसाथ के साथ जो दुर्व्यवहार करते थे वह आप ऊपर पढ़ चुके हैं और अन्त में उन्होंने अनहोनी बात ही कर डाली जो श्री जी को भी ये पत्र लिख दिया कि मैंने तुम्हें परमधाम और सुन्दरसाथ से निकाल दिया है । तो सूरत में जो सुन्दरसाथ इकट्ठा था और जिन्होंने जागृत बुद्धि के ज्ञान से श्री जी के स्वरूप की पहचान कर ली थी कि इसी तन में ही युगल स्वरूप विराजमान हैं तभी तो श्री जी, सुन्दरसाथ के लिये घर-बार, कुटुम्ब-कबीला छोड़ कर अपने प्राण भी अर्पण करने में कमी नही रखी । उधर बिहारी जी, जिनको परमधाम के एक शब्द की भी पहचान नही थी, केवल अपने मान अहंकार में ही सुन्दरसाथ पर अत्याचार करते रहे जैसे "थोथा चना बाजे घना" । कुरान में यह बात इस प्रकार कही गई है ।

महंमद साहब के समय में मक्का में उनके चाचा अबुजहल राज करता था और जो कोई भी महंमद साहब के कहने पर परमात्मा (अल्लाह) पर विश्वास लाता था तो उसको वह मरवा देता था । तब अल्लाह ताला ने जबराईल के द्वारा हुकम दिलवाया कि हे महंमद ! तुम मक्का को छोड़ कर एक नया शहर मदीना बसाओ । वहां पर मेरी वाणी के द्वारा लोगों को विश्वास दिलाओ और कुछ सेना भी भर्ती करो । फिर मक्के के ऊपर चढ़ाई करना और अबूजहल मारा जायेगा तथा मक्के और मदीने में तुम्हारा राज्य होगा। तो महंमद साहब ने ऐसा ही किया और मदीने में आज भी उनकी समाधि को बैत अल्लाह (अल्लाह का घर) मानते हैं । कुरान में सिपारा १५, सूरा १७ एवं आयत ८१ में इस प्रसंग का संकेत है ।

इसी प्रकार जब बिहारी जी का व्यवहार अबूजहल की तरह देखा तो सुन्दरसाथ स्वामी जी को ही पूर्ण ब्रह्म मान कर उनके चरणों में समर्पित हो गये तो श्री जी ने भी बिहारी जी को अन्तिम पत्र लिख दिया कि आज से मैं सुन्दरसाथ की जागनी का कार्य अपने सिर लेता हूं । यदि मैं किसी मान या लोभ के लिये किसी भी स्थान पर जाऊंगा तो मेरा कोई भी काम सीधा नहीं होगा और यदि धाम धनी के हुकम से सुन्दरसाथ की जागनी के लिये जहां भी मेरा कदम बढ़ेगा उसको इस ब्रह्मांड में कोई भी हिला नहीं सकेगा और आज के बाद किसी भी सुन्दरसाथ को नवतनपुरी में आपके दर्शन के लिये नहीं भेजूंगा ।

ऐसे पत्र के बाद तुरन्त ही श्री राज जी महाराज ने टट्टेनगर से श्री लालदास जी को माया से निकाल कर श्री जी के चरणों में सुन्दरसाथ की जागनी के लिये भेजा । तब श्री लालदास जी को श्री जी ने अपने मुख से कह दिया कि तुम जो प्रण लेकर चले थे वह तुम्हारा प्रण पूरा हो गया अर्थात् तुम श्री राज जी के चरणों में और सुन्दरसाथ के मिलावे में पहुंच गये हो ।

Nijanand App